International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 957-959

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 957-959
www.allresearchjournal.com
Received: 15-06-2017
Accepted: 20-07-2017

डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत,
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर, संस्कृत,
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

बुद्धचरितम् में अश्वघोष के भाषा शैली का वैशिष्ट्य

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

सारांशिका :–
संस्कृत साहित्याकाश के जाज्वल्यमान ज्योर्तिपुंज अश्वघोष एक महाकवि, बौद्धि धर्म भिक्षु एवं उपदेशक हैं। इन्होंने साहित्य को धर्म तक पहुँचाने के सोपान के रूप में अपनाया है। शील–सौन्दर्य से मण्डित काव्य यदि सत्काव्य है तो निःसन्देह अश्वघोष की रचनायें समुचित सत्काव्य प्रतिभासित होती है। यद्यपि अश्वघोष का मुख्य प्रयोजन काव्य रचना नहीं, अपितु बौद्ध के उपदेशों को प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पूर्ण जनमानस के समक्ष बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार करना था। धर्म का कर्त्तव्य मात्र इतना ही नहीं है कि वह जीवन के आदर्शात्मक पक्ष को प्रस्तुत करे, बल्कि धर्म का यह भी कार्य है कि वह श्रोताओं को उन आदर्शों में विश्वास दिलाने के लिए तथा आदर्शों की यथार्थता प्रतिपादित करने के लिए भी तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत करे। इसी श्रेष्ठ उदात्तात्मक भावकलश को परिपूर्ण करने हेतु अश्वघोष ने इस मार्ग को अपनाया।

मुख्य शब्द :– सत्प्रेरणा, प्रतिष्ठा, दृष्टान्त, भावकलश, अश्वघोष।

प्रस्तावना
संस्कृत साहित्याकाश के जाज्वल्यमान ज्योर्तिपुंज अश्वघोष एक महाकवि, बौद्धि धर्म भिक्षु एवं उपदेशक हैं। इन्होंने साहित्य को धर्म तक पहुँचाने के सोपान के रूप में अपनाया है। शील–सौन्दर्य से मण्डित काव्य यदि सत्काव्य है तो निःसन्देह अश्वघोष की रचनायें समुचित सत्काव्य प्रतिभासित होती है। यद्यपि अश्वघोष का मुख्य प्रयोजन काव्य रचना नहीं, अपितु बौद्ध के उपदेशों को प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पूर्ण जनमानस के समक्ष बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार करना था। धर्म का कर्त्तव्य मात्र इतना ही नहीं है कि वह जीवन के आदर्शात्मक पक्ष को प्रस्तुत करे, बल्कि धर्म का यह भी कार्य है कि वह श्रोताओं को उन आदर्शों में विश्वास दिलाने के लिए तथा आदर्शों की यथार्थता प्रतिपादित करने के लिए भी तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत करे। इसी श्रेष्ठ उदात्तात्मक भावकलश को परिपूर्ण करने हेतु अश्वघोष ने इस मार्ग को अपनाया।

अश्वघोष के काव्य अत्यन्त प्रेरणास्पद हैं, हमें इनके ग्रन्थ से अनेक शिक्षायें, दर्शन (बौद्ध), सत्प्रेरणा (सत्य, अहिंसा) एवं आदर्श (सिद्धार्थ का) मिलते हैं। उन्होंने काव्य के माध्यम से मानव दर्शन को जन–जन के हृदय तक पहुँचाया है। साहित्य में सत्यं, शिवं सुन्दरम् की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। इसमें किसी एक गुण का विपर्यय होने पर साहित्य पंगुसदृश हो जाता है। असत्य साहित्य पर किसी की निष्ठा नहीं होती, अतः शिवयुक्त होने पर ही वह सम्पूर्ण जनमानस का कल्याण एवं अभ्युदयकर सकता है। शिवत्व की स्थापना ही साहित्यकार की सबसे बड़ी साधना है जो इस काव्य में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है।

कवि अपनी रचना शैली के द्वारा ही लोक को आकर्षित करता है। इसी से उसकी काव्य कला का उदात्त स्वरूप प्रकट होता है और व्यक्तित्व का आभास मिलता है। कोई भावों को मृदुल शैली के द्वारा सरल शब्दों का प्रयोग कर रसिकों को रिझाता है। उनका बौद्धिक व्यायाम कराता है तो कोई अपनी बौद्धिक प्रतिभा एवं वाक्यविन्यास की छटा दिखाते हुए शब्द क्रीड़ा से आनन्दित कर देता है। अश्वघोष ने अपने इस काव्य में विभिन्न काव्यात्मक शैलियों का प्रयोग किया है, जिसको क्रमशः इस शोध–पत्र में वर्णित किया जा रहा है।

वर्णनात्मक शैली
इनके वर्णनात्मक शैली की यह विशेषता है कि वर्णन के आधार पर ही रूप रसादि विषयों को इन्द्रिय ग्राह्य बना दिया गया है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं –

तालप्रमाणश्च गृहीतशूला दष्टाकरालाश्च शिशुप्रमाणाः।
उरम्रवक्त्राश्च विहंगमाक्ष मार्जारवक्त्राश्च मनुष्कायाः।। [1]
काचिताम्राघरोष्ठेन मुखेनासदगान्धिना।
विनिशश्वास कणौऽस्य रहस्यंभूयतामिति।। [2]

उपरोक्त उदाहरणों में वर्णन के द्वारा ही श्रौत्र, चक्षु, घ्राण एवं स्वच्छ इन्द्रिय ग्राह्य वस्तुएँ अनभूत होने लगती है।

उपदेशात्मक शैली :
अश्वघोष कवि होने के साथ ही साथ उत्तम कोटि के बौद्ध धर्म के उपदेशक हैं। उनके ग्रन्थों में सर्वत्र उपदेश के लम्बे–लम्बे प्रकरण मिलते हैं। कोरे उपदेश के साथ ही सरसता का समावेश सफलता के साथ किया गया है। उपदेश और सरसता के समावेश के कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

अनया विद्यया बालः संयुक्त पंचपर्वया। संसारे दुःखभूयिष्ठे जनमस्वमिनिषिच्यते।। [3]

इस पंच पर्व (तम, मोह, महामोह, तामिस्त्र, द्वय) वाली अविद्या से संयुक्त होकर अज्ञ प्राणी इस दुःख बहुल संसार में पुनः पुनः जन्म में डाला जाता है।

दृष्टान्त प्रधान शैली :
विषय वस्तु का प्रतिपादन करते हुए जहाँ उसमें विश्वास उत्पन्न कराने के लिए वेद, पुराण एवं अन्य ग्रन्थों से दृष्टान्त प्रस्तुत किये गये हैं, उसे दृष्टान्त प्रधान शैली कहना उचित है। कवि ने रामायण एवं महाभारत जैसे ग्रन्थों से दिलीप, दशरथ, काश्यप, वशिष्ठ आदि जैसे अनेक दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए प्रतिपाद्य विषय को विश्वसनीय बनाया है। ऐसे स्थल से एक उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

अजस्य राज्ञस्तनयाय धीमते नराधिपायेन्द्रसखाय में स्पृहा।
गते वनं यस्तनये दिवं गतौ न मोद्यवाष्पः कृपणं जिजीवह।। [4]

राजा अज के बुद्धिमान् पुत्र, इन्द्र के सखा नरपति (दशरथ) से मेरी ईर्ष्या है जो पुत्र के वन चले जाने पर स्वर्ग चले गये था व्यर्थ रोते हुए दीन होकर जीवित न ही रहे।

तर्कप्रधान शैली :
अश्वघोष भिक्षु, आचार्य, महाकवि एवं महावादी थे। ऐसा काव्यों की पुष्पिका से विदित होता है। महावादि होने के कारण वह अनेक कथनों की पुष्टि तर्कों से करते हैं। ऐसे प्रसंग इनके काव्यों में मिलते हैं, कहीं तो ये तर्क आत्मगत है और कहीं अन्य के साथ किये गये हैं। जो तर्कप्रधान उदाहरण इस प्रकार है–

शरीरपीडा तु यदीह धर्मः सुखं शरीरस्य भत्यधर्मः।
धर्मेण चापनोति सुखं परत्र तस्मादधर्म लतीह धर्मः।। [5]

यदि इस लोक में शरीर पीडा (दुःख सहन रूप तप) धर्म है तो शरीर का सुख अधर्म (माना जायेगा) धर्म से परलोक में (प्राणी) सुख प्राप्त करता है। अतः धर्म इस लोक में अधर्मरूप फल देता है।

स्वर्गाय युवमाकमयं तु धर्मो मामभिलाषस्त्वपुनर्मवाय।
अस्मिन्वने येन न मे विवत्सा भिन्नः प्रवृत्या हि निवृत्तिधर्मः।। [6]

आप लोगों का यह धर्म स्वर्ग के लिए है, मेरी अभिलाषा पुनर्जन्म के अभाव के लिए है। इसी कारण इस वन में मुझे रहने की इच्छा नहीं, क्योंकि निवृत्ति धर्म प्रवृत्ति से भिन्न है।

चित्रात्मक प्रधान शैली :–
अश्वघोष ने चुने हुए कुछ ही शब्दों के माध्यम से विषय वस्तु को इस प्रकार उपस्थिति किया है कि पाठकों एवं श्रोताओं के मानस पटल में उनका चित्र उद्भाषित होने लगता है। इस प्रकार के वर्णन के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है–

स्थूलौदरः श्वासचलच्छरीरः स्रस्तांसबाहुः कृशपाण्डुगात्रः।
अम्बेति वाचं करुणं ब्रूवाण पर समाश्रित्य नरः क एष।। [7]

उपर्युक्त उदाहरण में कवि ने व्याधिग्रस्त व्यक्ति का वर्णन बड़े ही आकर्षण पूर्ण ढंग से किया है। जिसके कथन से ही एक व्यधिग्रस्त व्यक्ति का चित्र सामने उपस्थित हो जाता है।

संख्यात्मक शैली :
स्व पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए साहित्य में गणितीय संख्याओं के माध्यम से आकर्षण लाने की परम्परा कवियों में कहीं–कहीं पायी जाती है। इनके इस ग्रन्थ में भी यह शैली प्राप्त होती है। जैसे–

एकं विनिन्ये स जुगोप सप्त सप्तैव तत्याज ररक्ष पंच।
प्राप त्रिवर्ग बुबुधे त्रिवर्ग जज्ञे द्विवर्गे प्रजहो द्विवर्गम्।। [8]

उसने एक (अपने) को विनीत किया, सात (राज्यों के सात अंगो) की रक्षा की; सात (राजाओं के सात दोषों) का त्याग किया; पाँच (पाँच उपायों) की रक्षा की, त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) को पाया त्रिवर्ग (शत्रु मित्र मध्यस्थ) को समझा, द्विवर्ग (नीति, अनीति) को जाना और द्विवर्ग (काम, क्रोध को छोड़ा)।

संवादात्मक शैली :–
पात्रों के पारस्परिक कथोपकथन इनके काव्यों में रूपक साहित्य की भाँति बड़े प्रभावात्मक दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार के कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

नरदैवसुतस्तमभयपृच्छद्वद को सीति शशंस सोऽथ तस्मै।
नर पुंगव! जन्ममृत्युभूतः श्रमणः प्रव्रजितो ऽस्मि मोक्ष हेतोः।। [9]

राजपुत्र ने उससे पूछा–कहो कौन हो? तब उसने उससे कहा, हे! नरश्रेष्ठ जन्म मृत्यु से डरा हुआ मैं संयासी हूँ तथा मोक्ष के लिए संयास लिया हूँ।

अलंकार प्रधान शैली :–
इनके इस काव्य में शब्दाश्रित शब्दालंकार एवं अर्थ के शोभाधायक अर्थालंकार अनेक स्थानों पर देखे जा सकते हैं। इस प्रकार इनके प्रिय अलंकार दोनों है, मात्र एक ही नहीं। जैसे–

कासाचिंदासां तु वरांगनानां जातत्त्वराणामपि सोत्सुकानाम्।
गतिं गुरुत्वाज्जगृहुर्विशालाः श्रोणीरथाः पीनपयोधराश्च।। [10]

पुनरावृत्ति प्रधान शैली :–
उपदेशात्मक वाक्यों पर जोर देने के लिए कवि ने कुछ पदों को बार–बार दुहराय है। अतः ऐसे स्थलों को पुनरावृत्ति के रूप में देखा जाता है। जैसे–बुद्धचरितम् के एकादश सर्ग में–'कामेषु कस्यात्मवतो रतिः स्यात्' की आवृत्ति 11 बार प्रत्येक श्लोक 23–33 के चतुर्थ पाद में हुई है।

विवेचनात्मक शैली :–
जिस शैली के विषय में गूढ़ अंशों की अभिव्यक्ति के लिए उसके तथ्यों का विवेचन नाना प्रकार से किया जाता है, वहाँ विवेचनात्मक शैली होती है। दार्शनिक एवं विवेचनात्मक विषयों का विवेचन करने के लिए कवि ने इस शैली को अपनाया है, जो इस प्रकार है–

जायते जीर्यते चैव बाध्यते म्रियते च यत्।
तद्व्यक्तमपि विज्ञेयमव्यक्तं तु विपर्ययात्।। [11]

अर्थात् जो जन्म लेता है, बूढ़ा होता है, पीड़ित होता है और मरता है, उसे व्यक्ति समझना चाहिए और जो इसके विपरीत है, उसे अव्यक्त समझना चाहिए।

कतिपय त्रुटियाँ :–

कवि के काव्य में कहीं–कहीं आडम्बर के कारण अर्थों की स्पष्ट अभिव्यंजना नहीं हुयी। उदाहरणस्वरूप बुद्धचरितम् (13/60) में मार का विशेषण 'विमनः' (विमनो) प्रयुक्त हुआ है। बुद्ध0 (8/34) में 'आर्यपुत्र' के स्थान पर 'अर्यपुत्र' कर दिया गया है। ये प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध माने जाते हैं।

इनके इस काव्य में कुछ ऐसे भी प्रयोग मिलते हैं, जो लोकिक संस्कृत में अप्रयुक्त है। जैसे–अग्नि के लिए 'द्विज' (बु0 11/61), 'अगस्त्य' के लिए 'और्वशेष' (बु0 9/9) इत्यादि के प्रयोग हमें वेदों में प्राप्त होते हैं।

अतः अश्वघोष के भाषा शैली पर दृष्टिपात करने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि अश्वघोष ने धर्म प्रचार के लिए साहित्यिक कला को अपनाया है। साहित्यिक कला को आश्रय लेने से उनके मार्ग में कुछ बाधायें अवश्य उपस्थित हुई है। लेकिन इन बाधाओं से कवि के महत्त्व एवं प्रयास में कोई कमी नहीं आने पायी हैं ये काव्यकला के माध्यम से लोगों को धर्म की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं।

कौशल प्रदर्शन के लिए काव्य कला को अपनाकर उपदेश देने की बात हमें लक्षण ग्रन्थों में मिलती है–

'कान्तासम्मितयोपदेशयुजै' काव्य प्रकाश/प्रथम उल्लास में मम्मट ने वर्णित किया है। अतः उपदेश के लिए साहित्यिक कला के विविध कौशल प्रदर्शन करते हुए कवि का प्रयास स्तुत्य एवं सर्वजन सहृदयश्लाघ्य है।

सन्दर्भ

1. बुद्ध./13/23
2. बुद्ध./4/31
3. बुद्ध./12/37
4. बुद्ध./8/76
5. बुद्ध./7/26
6. बुद्ध./3/41
7. बुद्ध./2/41
8. बुद्ध./2/41
9. बुद्ध./5/17
10. बुद्ध./3/16
11. बुद्ध./12/22